ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-2* March- 2020
Innovation The Research Concept

लोकनाट्य की सांगीतिक परम्परा के अन्तर्गत राजस्थान में प्रचलित अलीबक्शी ख्याल ''पदमावत्''

Alibakshi Khyal "Padmavat" Prevalent in Rajasthan Under the folk tradition of Loknatya

Paper Submission: 20/03/2020, Date of Acceptance: 28/03/2020, Date of Publication: 29/03/2020

नीलम सैन
सहायक प्रोफेसर,
संगीत विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

राजस्थान की सांगीतिक परम्परा अपना इतिहास बनाये हुये है चाहे वह लोकसंगीत हो या नृत्य हो या फिर लोकनाट्य ख्याल। राजस्थान के ऐतिहासिक लोकनाट्य ख्याल कलाकार अलीबख्श ने अलीबख्शी ख्याल परम्परा को जन्म दिया और अपने मेहनत और अभ्यास से संगीत जैसे तत्व को जोड़कर अनूठी ख्याल गायन परम्परा निर्मित की इसी परम्परा में नाट्य ख्याल पदमावत भी एक कड़ी है। 'पदमावत' नाट्य ख्याल सांगीतिक दृष्टि से अनूठा है। इसमें स्वर, ताल, लय का सामंजस्य अत्यन्त ही आकर्षित करने वाला तत्व है।

The musical tradition of Rajasthan maintains its history whether it is folk music or dance or folklore ideas. The historical Loknatya Khyal artist Alibakhsh of Rajasthan gave birth to the Alibakhshi Khyal tradition and created a unique Khyal singing tradition by combining elements such as music with his hard work and practice. 'Padmavat' Natya Khyal is unique in musical terms. In this, the harmony of tone, rhythm, rhythm is a very attractive element.

मुख्य शब्द : लोकनाट्य, अलीबख्शी, ख्याल, प्रेमा–ख्यान, प्रदर्शन, मंच, ख्याल, राजस्थान, संयोग–वियोग, दोहा, तोड़, मांझ।

Loknatya, Alibakhshi, Khyal, Prema-Khyan, Performance, Stage, Khyal, Rajasthan, Coincidence-Disconnection, Doha, Break, Manjh.

प्रस्तावना

पदमावत नाट्य ख्याल

लोकनाट्य कलाकार अलीबक्श ने लोक प्रचलित प्रेमा–ख्यान पद्मावत को अपनी अनूठी ख्याल परम्परा में बाँधकर आमजन के समक्ष लोकप्रिय बना दिया है लोकनाट्यकार अलीबक्श ने इस लोकनाट्य में प्रेम–श्रृंगार और संयोग–वियोग के मनोरम चित्र अंकित किये है जो पद्मावत लोकनाट्य की सफलता दर्शाते है। अलीबक्श ने इस लोकनाट्य में स्वयं का परिचय इस प्रकार दिया है :–

राजपूत हूँ टीकावत, मेरा अलीबख्श है नाम।
नगर मुंडावर सुबस वसो जो मेरा निज धाम।।
जो मेरा निज धाम, राम ने देख जहां पर जाया।
मैं डुबत लिया तिराय, प्रभू थारी अजब अनोखी माया।।
मैं तो हुआ मरण को त्यार, नाथ थाने अपने हाथ बचाया।
गरीब दास की मेहर से सो मैंने मन चाहा वर पाया।।
सच्चे सॉंई सरजनहार दास का बेड़ा लगा दो पार।

लोकनाट्यकार अलीबख्श ने पद्मावत लोकनाट्य ख्याल इस प्रकार बताया है।

श्री
पद्मावत लोकनाट्य ख्याल
''मेहर करो महाराज आज अब दो निर्गुन को ज्ञान।
सुरत समास्त मेट दो भरी सभा में आन।।
अजी भरी सभा में आन धर ध्यान आप को टेरू।

गणपत गणेश–सुत महेश के सो
जी शीश चरण में गेंरू।।
अलीबख्श थारा दास कदीमी, आया रेवाड़ी फेरू।।
किजो परमेश्वर प्रतिपाल, सभा में बसो हमारे ख्याल।।''[1]

(पद्मावती बाई)

मांझ – हाथ जोड़ विन्ती करूं सुन पड़ित महाराज।
करम मेरे में जो लिखा तुम पत्रा देखों आज।।

(जवाब पण्डित का)

मांझ – मैं पण्डित परमेश्वर रटूं, मेरी कर करतार सहाय।
पुस्तक पत्रा बांच कर दूँ सबको सगुण बताय।।
दोहा – दूँ सब को सगुण बताय, सारदा माई सरनली तेरी।
मेरी पुस्तक तिलक विराजता, गले जनेऊ गेरी।।
नित रखूँ हाथ गँऊ मुखी में भगवत की माला फेरी।
कोई मिले साहब का प्यारा कथा बचावे मेरी।।
तोड़ – करके आया हूँ मैं आस, रहता संगलदीप खास।

(जवाब पण्डित का)

दोहा – जो कुछ लिखी कलाम में सो, बाई वोही कहूँ विचार।
लिखा विधि का ना मिटे, सो बाई होगा बरमबार ।।
एक रत्नसेन राजा हुआ, सो वो रहे समंदर पार।
वो आवे गढ़ चितौड़ से सो, बाई थाने ले जा तैयार।।
तोड़ – बाई क्या देखू तेरा हाथ, जो कुछ लिखी कर्म की बात

(जवाब बाई का पण्डित से)

माँझ – पण्डित मेरे उमर की पल–पल बीति जाय।
बिना पुरष की कामनी सो म्हारो धिर्क जीवन जग माय।।
दोहा – म्हारो धरम जीवन जग आय, पद्मनी पतियाँ लिखूं।
पहले सिद्ध श्री लिखू सोजी, पीछे अकमा सारी ।।
पतियां लिखूं मंगल समाचार, पद्मावत की पीव की प्यारी।
जल्दी आकर खबर लीजियो कन्या बैठी कुवारी ।।

(जवाब बाई का)

दोहा – अरे तुम आवो ना हीरामन तोता पर दुःख भजन हार।
तेरी सूरत बै माता घड़ी थाने अक्ल दई करतार ।।
कागज मेरा हाथ को, ले जावो समंदर पार।
देकर राजा रतन को सो जी लावो अपने लार ।।
तोड – सुआ सुनियो ऐ सुरग्यान, तेरे पे वारू अपनी जान।

जवाब रत्नसेन का तोते से)

दोहा – अरे तू किसका कागज लाया है सोहे सुनरे सुआ भाया।
थारी सुरत भोली दिखती, सोहे शुद्ध तुम्हारी काया।।
किस राजा पतियां लिखी, सो तू कौन मुलक से आया।
किन राजा कृपा करी, सो तू म्हारे पास खिंदाया।।
तोड़ – सुआ सुनियो म्हारो आया, सोहे कौन मुल्क से आया।
मेरे मन मूसा वाहन बस गयो हित से हिया बीच हेरू।

(जवाब तोते का)

दोहा – मैं आया संगलद्वीप से जो भेजा परिया नन्द।
जिन धर पद्मावत जन्म लियो, सो जी महाकरी गोविन्द।।
वो सब परियों में यो दीपे, जो तारो में चन्द।
पतियाँ ऐसी लिखी है सो जी क्यों कर पड़ा ब्रह्म का फन्द।
तोड़ – राजा सुनिये जी राजकुमार, अर्ज करता है सूआ तावेदार।

(जवाब रत्नसेन का)

''आज म्हारी प्यारी जीरो कागज आयो छै।
लिख पतियाँ इन प्यारी ने भेजी कागज में फरमायौ छै।।
जाय मिलू पद्मावत प्यारी से जी मेरो हुलसायो छै।
आज म्हारी प्यारी जीरो कागज आयौ छै।।
कहे अलीबख्श गोपाल प्यारे इस सूवा भेद लगायो छै।
आज म्हारी प्यारी जीरो कागज आयो छै।।''[2]

(जवाब रानी नागमती का)

दोहा – सुपना की ही बात है सो पियूं क्या दिल में ललचाया।
वो है कैसा संगलद्वीप है सो जो थारा मन में भाया।।
वो कैसी रानी पद्मनी सो जिन तुमको पिया बनाय।
थारा जावा की मन में बसी सौ सूवा कपटी बहकाया।।
तोड़ – अब तुम सुनो हमारे पियु, तुम बिन कहा धराऊँ जीव।

(जवाब नागमती का सास से)

दोहा – तेरा पूत चलो परदेस ने सो वोह हरगिज ठहरे नाही।
मेरो कहो सुनो माने नहीं, सो मैं बहौत रहो समझाई।।
उन कफनी सेली पहन के सो लई अंग भभूत
रमाई।पद्मावत जादू कियू सो वोह परदेसा न जाई।।
तोड़ – मेरो सुनो सपूती सास, रिता करे पुरूष की आस।

(जवाब रत्नसेन का)

मांझ – राजा से जोगी हुआ मैंने कर लिया भगवां भेस।
राज पाट सब छोड़ के मैं अब चाला परदेस।।
दोहा – ''सूवा तेरी सियान देख मेरो सीतल होवा शरीर।
में देख तुझे हरी हो गई सो जो तुलसी सीचो नीर।।
सोना में चोच मढाय दूं सो पाऔ में कड़े जंजीर।
ऐसी खुशी सुनाई सूवा, बंध गई मेरी धीर।।''[3]
तोड़ – सूबा सुनिये ये री म्हारा भाया, तू तो रतनसैन ने लाया।

(जवाब बढ़ेर जोगी का मालन से)

दोहा – हम जोगी धर के लाड़ले सो जी किया मुल्क का फैरा।
हम आये तेरे बाग में, हमें करादै सेरा।।
अब सांझ भई दिन अनासे, सो जी लिया आसरा तेरा।
आज रात तू करंनदे सो, हम करा बाग में डेरा।।
तोड़ – मालन दम तेरे की खैर जोगी करे बाग की सैर।

(जवाब मालन का जोगी से)

दोहा – हरगिज डेरा हो नहीं सो चाहे लाख बताओ हुन्दर।
ये पद्मावत का बाग है सो यामे है शिवजी का मन्दिर।।

वाके पिता को यही हुक्म है सो कोई धसे ना बाग के अन्दर।
अरे तेरी तो क्या गूदड़ी यहां पचगे शाह सिकन्दर।।
तोड़ – खिड़की खुले बाग की नाय, जाकर रहो शहर के माय।
दोहा – ''मैंने पदम हूँ न देखी, मन की मन में रही।
मन मजनूँ को मिली ना लैला, बारह बरस धूनी वन में रही।।''[4]

(रत्नसेन की विनती शिवजी से)

सुनियो जी महाराज सदाशिव इस जोगी की टैर।
में अर्ज करू हूं आपसे सो जी सीस चरण में गैर।।
मैं माता छोड़ी बिलकती सो सब रोवत छोड़ो शहर।
अब इस जोगी के हाल पे सो जी आप करोगे महर।।
तोड़ – सदा शो रटता बारम्बार म्हारा बेड़ा लाऔ पार।

(जवाब शिवजी महाराज)

दोहा –
''तूने जोगी जुगत जानी नहीं सो नाहक उमर गवाये।
कपड़ा रंगकर गेरवा सो तोहे जोग जगत नहीं पावे।।
जोग जुगत जबहि मिले सो जब हिरदे ध्यान लगावे।
मतलब कारन जोगी हुआ अब जोग जुगत नहीं आवे।।
तोड़ – अब तुम रहो निरंजन नाम तुम्हारे पूरन हो सब काम।''[5]

उपरोक्त पद्यानुसार पद्मावत की कथावस्तु में सिंघलद्वीप की राजकुमारी पद्मावती अपने पण्डित से राजा रत्नसेन से विवाह सम्पन्न होने की भविष्यवाणी सुनकर अत्यन्त प्रसन्न होती है और तोते के द्वारा अपना प्रेम सन्देश चितौड़गढ पहुंचाती है। तोता चितोड़गढ़ पहुंचकर पद्मावती का प्रेम सन्देश राजा रत्नसेन को देता है और तोते के द्वारा पद्मावती की सुन्दरता सुनकर, उसे पाने के लिए लालायित हो जाता है। राजा रत्नसेन जोगी भेष धारण कर सिंघलद्वीप जाने की तैयारी कर लेता है। तभी उसकी पत्नी नागमती राजा को इस अमर्यादित कार्य के लिए जाने से रोकती है और कहती है

''थारी देही ऐसी कांपती सोजी ऐसी क्या है बात।
मैं फूलों की सी कामनी मेरी कंचन सी कात।।
अजी मुखड़ा मेरा यो दिपे सोजो जुड़ा नगीना दांत।
सूरत में मैं कमती नहीं सो परियां ने करती मात ।।''[6]

परन्तु राजा जोगी बनकर सारा राज–पाट छोड़कर पद्मावती की प्राप्ति के लिए निकल पड़ता है। राजा रत्नसेन सिंघलद्वीप पहुंचकर बाग में ठहरता है तथा पद्मावती से विवाह करने की इच्छा प्रकट करने पर फांसी की सजा का अधिकारी हो जाता है तब राजा रत्नसेन सोचता है कि जिस पद्मावती के लिए अपना सब कुछ त्याग कर आया हूँ उसके ही दर्शन नहीं हो पाये तब वह भगवान शंकर का स्मरण करता है और भगवान शंकर के आशीर्वाद से राजा रत्नसेन व पद्मावती का विवाह सम्पन्न हो जाता है और वे दोनों चितौड़गढ़ की ओर प्रस्थान करते है और यही पर अलीबख्श के लोकनाट्य पद्मावत की कथावस्तु समाप्त हो जाती है।

अध्ययन का उद्देश्य

राजस्थान की सांगीतिक परम्परा के अन्तर्गत अलीबख्शी ख्याल 'पद्मावत' को जन–जन तक पहुंचाकर हमारी सांगीतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर को सभी के समक्ष लाने के साथ राजस्थान की लोकनाट्य एवं लोकसंगीत परम्परा में ख्यालों के कई रूपों को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में राजस्थान के लोकनाट्यकार अलीबख्श का लोकनाट्य 'पद्मावत' जनमानस पर अपनी अमिट छाप बनाये हुए है। इस प्रकार सौन्दर्य, प्रेम, श्रृंगार, विरह इन सभी पहलुओं का अलीबख्श की रचनाओं में सुन्दर अंकन हुआ है। ये सभी प्रसंग इतने मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी है कि इनकी छवि मानस पटल पर अंकित सी हो जाती है, यही रचनाकार, संगीतकार और नाट्यकार अलीबख्श के लोकनाट्य ख्यालों की सच्ची कसौटी है।

अंत टिप्पणी

1. *मा. मोहर सिंह जांगिड, ओमप्रकाश जांगिड़, श्री कृष्ण भक्त संगीत सम्राट श्री अलीबख्श, मुण्डावर अलवर, राजस्थान के द्वारा रचित ख्याल, पृ.सं. 18–19*
2. *किशनगढ़ (अलवर) के अलीबख्श ख्याल गायक श्री हरिराम सैनी द्वारा अवशेष रूप से प्राप्त पुस्तक द्वारा लिखित 'पद्मावत' लोकनाट्य ख्याल, पृ. सं. 13*
3. *डॉ. रामकुमार भारद्वाज, डॉ. अनिता भारद्वाज, लोककवि एवं नाट्यकार अलीबख्श, मौलिक साहित्य प्रकाशन, पृ. स. 34*
4. *डॉ. रामकुमार भारद्वाज, डॉ. अनिता भारद्वाज, लोककवि एवं नाट्यकार अलीबख्श, मौलिक साहित्य प्रकाशन, पृ. स. 205*
5. *शर्मा, रेवती रमण, अलवर राजस्थान, द्वारा प्राप्त जानकारी के आधार पर लिखित नाट्य ख्याल।*
6. *सैन, श्री हरदेवा माँचा अलवर, द्वारा प्राप्त हस्तलिखित सामग्री के माध्यम से लिखित नाट्य ख्याल, पृ.सं. 28*